

读懂禅的故事，感悟人生平常心

禅并非深不可测的玄机，只是普通人的平常心态而已，说穿了就是吃饭好好吃，睡觉好好睡，做事认真做，为人不计较。将禅的启示用平常心解读一番，让每个人都能读懂禅，养成良好的处世习惯，正是本书的初衷所在。

Chán shì yí ke Píng  
Changxin

欧阳典泰◎编著

平 常 心

是一颗

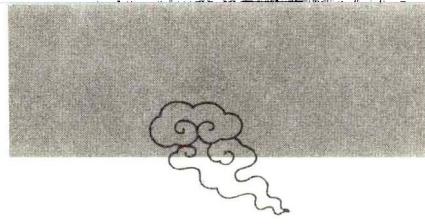
口 禅

地 震 出 版 社

禅是一个个照亮人心的小故事

参 禅 一 颗 平 常 心 就 是 凡 人 的 幸 福 真 谛

幸 福 真 谛



# 禪是一顆平常心

欧阳典泰◎编著

地  
震  
出  
版  
社

### **图书在版编目 (CIP) 数据**

**禅是一颗平常心/欧阳典泰编著 . —北京：地震出版社，2009.4**

**ISBN 978 - 7 - 5028 - 3390 - 9**

**I . 禅… II . 欧… III . 禅宗 - 人生哲学 - 通俗读物**

**IV . B946.5 - 49**

**中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2009) 第 021942 号**

**地震版 XT200900009**

### **禅是一颗平常心**

**欧阳典泰 编著**

**责任编辑：陈晏群**

**责任校对：庞亚萍**

---

**出版发行：地震出版社**

北京民族学院南路 9 号 邮编：100081

发行部：68423031 68467993 传真：88421706

门市部：68467991 传真：68467991

总编室：68462709 68423029 传真：68467972

E-mail：seis@ht.ror.cn.net

**经销：全国各地新华书店**

**印刷：廊坊市华北石油华星印务有限公司**

---

**版（印）次：2009 年 4 月第一版 2009 年 4 月第一次印刷**

**开本：787 × 1092 1/16**

**字数：450 千字**

**印张：25.75**

**印数：00001 ~ 10000**

**书号：ISBN 978 - 7 - 5028 - 3390 - 9 / B (4118)**

**定价：46.00 元**

**版权所有 翻印必究**

**(图书出现印装问题，本社负责调换)**

## 前言

禅学是一门生活的智慧和艺术，特别是在现今快节奏的繁华社会中，禅的确能在我们的内心世界洒下清凉的甘露。

说起来，禅与我们的生活相似之处颇多。

禅师参禅在于开悟，人活着是为了幸福。从本质上讲，两者没有太大的不同。开悟靠什么？“悟”字拆开就是“吾心”，参禅靠的正是我们的心，人心本就是世间最宝贵最重要的东西。从这个角度看，学禅就是学习一种心态，人活着就要有禅的心态。

一个心如明镜的人，镜前的万物都能看得清清楚楚；而一旦用心去思量，愿望，攀缘，那么这面明镜就会蒙上尘土，就会看不见万物的形象。因此，禅的目的就是擦掉我们心灵上的灰尘，扭转我们这些现代人生活意志萎靡的趋势，改变我们对生活态度，使我们拥有一颗平常心。

“平常心”是一种超越凡俗、超越功名利禄的大悲悯、大情怀，是貌似不动声色，实则声色尽在眼底的超凡和脱俗。表面的平常，需经多年的痛苦磨炼方能获得，心平气和是一种大家提倡的生活状态，更是我们想要快乐一生而必须具备的一种精神状态，能否以平和的心态对待生活，对待他人，对待荣辱升沉，对待种种意外的遭际，是人生境界和人生态度的重要表现。

平常心贵在平常，那就是波澜不惊，生死不畏，于无声处听惊雷。利不能诱，邪不可惑，心能昭日月。一身正气，两袖清风，做堂堂正正人。有情有义，侠骨柔肠，远离颠倒梦想。悲悯众生，利益众人，却能明哲保身。上不负天，下无愧人，桓颓其奈我何？旦夕祸福，知天达命，不违自然。这样一来，便能“素甘淡泊心常泰，曾履忧危体益坚”；才会悠然自得，清净无染地生活；才能浑然与万物融合为一，综览生命的全景，体悟人生的玄妙，窥探自然中处处彰显的





## ● 禅机。

平常心所产生的力量是不可估量的，保持一颗好的平常心能有以下几种好处：首先，拥有平常心的人仁慈、淡泊、宽容、乐观，不会将精力纠缠在蝇头小利与恩恩怨怨当中，所以能充分享受生活的乐趣；其次，拥有平常心的人不虚荣、不虚伪、不虚假，他们能正视自己的缺点和不足，因此能让自己做人做事尽可能地完美。最后，平常心更是成功之道。拥有平常心的人往往是一个胸襟宽、度量大的人，他们做人光明磊落，做事坦坦荡荡，能得到身边人的信任、爱戴与拥护，而得人心者得天下，何愁事业不能成功呢？

参好生活的禅，需要一个平常心，有了平常心，才能活得自在。一位禅师开悟后云游四方，借宿在一位老妇人家里。禅师发现老妇人面有苦色，便追问缘由。老妇人忍不住垂泪道：“我是在为两个女儿伤心啊！”禅师问：“究竟有何事让施主如此放心不下？”老妇人答道：“我有两个女儿，大女儿的丈夫是卖鞋的，二女儿的丈夫是卖伞的。天放晴的时候，卖伞的小女儿日子一定不好过；下雨天，大女儿家的鞋又卖不出去。唉，看到两个女儿日子如此难过，我的心里怎能好受呢？”禅师笑着说：“施主这么想实在不妥。天晴时，人们都会买鞋，大女儿的鞋店生意一定很好；下雨天，人们需要用伞，小女儿的雨伞生意自然不错。如此看来，你应该天天为她们开心才对，为何还要难过呢？”老妇人听完禅师的话，一下子想通了，此后无论天晴还是下雨天总是笑容满面。

视角改变了，心态调整了，对待事物的看法就会更积极向上。人生不也是如此吗？痛苦的反面是快乐，痛苦的反面是笑容，我们要善于从不同的角度去看待生活。人活一世，功名利禄生不带来死不带去，真正随身的只是你的心。

禅无处不在，禅源于生活。将禅的有益启发用生活的辩证法解读一番，特别是在当今繁华世界，让老百姓学一些禅的智慧，摆脱日常世俗的烦恼，养成平常心的生活态度，正是本书初衷所在。

# 目 录



## 百味皆苦——禅是心灵的瑜伽

手心是烦恼，手背是菩提，只要翻过来便是，无多无少，烦恼变为菩提。所谓“烦恼菩提冰是水，生死涅槃法即空”。若悟得，则人法皆空，若不明，就仍有法执。

|           |    |           |    |
|-----------|----|-----------|----|
| ◎ 心动幡动    | 3  | ◎ 白隐生子    | 15 |
| ◎ 美丽的寺庙   | 3  | ◎ 床头女像    | 16 |
| ◎ 落花无言    | 4  | ◎ 放下得道    | 17 |
| ◎ 怒心起时细思量 | 5  | ◎ 禅力如狮虎   | 17 |
| ◎ 思与不思    | 7  | ◎ 事半功倍    | 18 |
| ◎ 须弥藏芥子   | 7  | ◎ 见与不见    | 19 |
| ◎ 吃蜜谢罪    | 8  | ◎ 心净土净    | 20 |
| ◎ 一口好牙    | 9  | ◎ 行囊空空    | 20 |
| ◎ 心灭法灭    | 9  | ◎ 无事不禅    | 21 |
| ◎ 惜福有福    | 10 | ◎ 心如虚空    | 21 |
| ◎ 心净生佛    | 10 | ◎ 求人不如求己  | 22 |
| ◎ 水满自溢    | 12 | ◎ 怀疑生暗鬼   | 23 |
| ◎ 烦恼就是自己  | 13 | ◎ 云在青天水在瓶 | 24 |
| ◎ 放下放下    | 14 | ◎ 只是一杯茶   | 25 |
| ◎ 暮鼓晨钟    | 14 | ◎ 禅镜照性    | 26 |
|           |    | ◎ 心空及第    | 27 |
|           |    | ◎ 非驴非马    | 28 |
|           |    | ◎ 拨云见日    | 29 |
|           |    | ◎ 参禅法器    | 30 |
|           |    | ◎ 生命的长度   | 31 |
|           |    | ◎ 佛陀貌美    | 32 |





# 禅是一颗平常心

|             |    |         |    |
|-------------|----|---------|----|
| ◎ 从心流出      | 33 | ◎ 雪窦非信差 | 43 |
| ◎ 如水归水      | 34 | ◎ 高尾染坊  | 44 |
| ◎ 一念嗔心      | 35 | ◎ 临济拜祖  | 45 |
| ◎ 没时间老      | 35 | ◎ 一切为空  | 46 |
| ◎ 天下第一的茶道   | 36 | ◎ 禅师与医生 | 47 |
| ◎ 剑道要诀      | 37 | ◎ 乞丐买饼  | 48 |
| ◎ 知非便舍      | 38 | ◎ 一村菊香  | 49 |
| ◎ 禅师的兰花     | 39 | ◎ 烦恼即菩提 | 50 |
| ◎ 诚实无欺      | 39 | ◎ 本性宝藏  | 51 |
| ◎ 并不受矛盾影响   | 40 | ◎ 忌妒成祸  | 52 |
| ◎ 唯心净土，自性弥陀 | 41 | ◎ 禅门静默  | 52 |
| ◎ 以静制动      | 42 | ◎ 平常是禅  | 53 |
| ◎ 灵光顿悟      | 42 | ◎ 心性如一  | 54 |



## 参透玄机——棒喝交加中遇见佛祖

禅，有时说尽了千经万论，禅的边还没有摸到；有时只是轻描淡写的一句话，一个动作，却能彻骨彻髓地认识自家的本来面目。

|          |    |        |    |
|----------|----|--------|----|
| ◎ 当头棒喝   | 57 | ◎ 并无所悟 | 69 |
| ◎ 佛祖吃水   | 58 | ◎ 饼与禅  | 70 |
| ◎ 行脚僧    | 59 | ◎ 禅无妄语 | 71 |
| ◎ 谁是禅师   | 60 | ◎ 菩萨说法 | 71 |
| ◎ 云水随缘   | 61 |        |    |
| ◎ 智闲开悟   | 61 |        |    |
| ◎ 悟性不得模仿 | 62 |        |    |
| ◎ 道岫悟禅   | 63 |        |    |
| ◎ 因人而异   | 64 |        |    |
| ◎ 心无外物   | 65 |        |    |
| ◎ 给袈裟吃饭  | 66 |        |    |
| ◎ 威德无量   | 67 |        |    |
| ◎ 话头禅    | 67 |        |    |
| ◎ 悟无边缘   | 68 |        |    |





|        |    |
|--------|----|
| 偈语     | 72 |
| 好事不如无事 | 73 |
| 禅言得失   | 74 |
| 无言之教   | 75 |
| 祭神如神在  | 76 |
| 门里还是门外 | 76 |
| 自我自佛   | 77 |
| 答与不答   | 78 |
| 禅之玄妙   | 78 |
| 佛性为姓   | 80 |
| 善自珍重   | 81 |
| 答非所问   | 81 |
| 禅无你我   | 82 |
| 超度亡狗   | 83 |
| 六祖说禅   | 84 |
| 育才之道   | 85 |
| 眼的真心   | 86 |
| 一与三    | 87 |

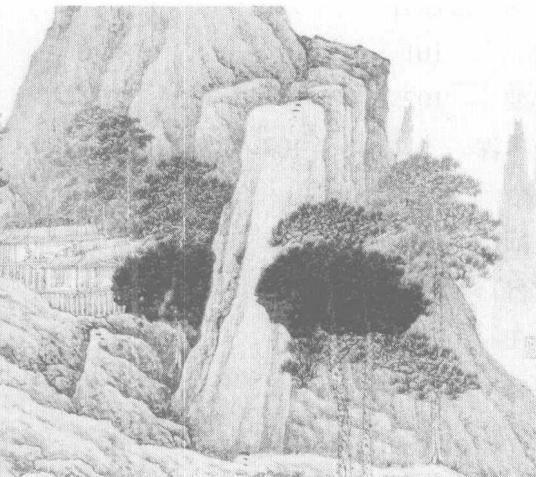
|            |     |
|------------|-----|
| 教外别传       | 87  |
| 一二三四五      | 89  |
| 禅与牛        | 90  |
| 洞山问禅       | 91  |
| 直指本心       | 92  |
| 虎头长角       | 93  |
| 来来往往       | 94  |
| 一宿禅        | 95  |
| 一切皆禅       | 96  |
| 迷悟习性       | 97  |
| 丙丁童子来求火    | 98  |
| 性不生滅       | 99  |
| 佛与牛粪       | 100 |
| 一生万法，万法皆一  | 100 |
| 不生禅        | 101 |
| 了悟心要       | 102 |
| 禅房花木深      | 103 |
| 豁然大悟       | 104 |
| 为师之师       | 105 |
| 人悟称得       | 105 |
| 一念自在       | 106 |
| 悟无生忍       | 107 |
| 佛语心为宗      | 107 |
| “这个”是什么    | 108 |
| 灵利道人       | 109 |
| 从心所欲       | 110 |
| 禅之味道       | 111 |
| 变与不变       | 112 |
| 心外求法，患得患失  | 113 |
| 心内悟        | 114 |
| 心有滞，而众法皆不通 | 115 |
| 上座何在       | 115 |



## 酒肉穿肠——当和尚遇到钻石

“酒肉穿肠过，佛祖心中留”。密教的祖师喜食鱼肠子，吃完后又吐出来，放到水里，鱼又活了。只要心中有佛，怎么做都是佛。

|          |     |             |     |
|----------|-----|-------------|-----|
| ◎ 和尚喝粥   | 119 | ◎ 以物悟道      | 134 |
| ◎ 色即是空   | 120 | ◎ 有相无相      | 135 |
| ◎ 黄金毒蛇   | 121 | ◎ 非礼勿行      | 136 |
| ◎ 无休止的钱袋 | 122 | ◎ 生灭无常      | 137 |
| ◎ 衣裹真珠   | 123 | ◎ 不说生，不说死   | 138 |
| ◎ 真禅无物   | 124 | ◎ 废纸一堆      | 140 |
| ◎ 时间纽扣   | 125 | ◎ 禅师的生活     | 140 |
|          |     | ◎ 心地透明，无气可生 | 141 |
|          |     | ◎ 体相本自然     | 142 |
|          |     | ◎ 寒山的处世秘诀   | 143 |
|          |     | ◎ 银货两讫      | 145 |
|          |     | ◎ 众生平等      | 145 |
|          |     | ◎ 遇佛杀佛      | 146 |
|          |     | ◎ 轮回流转      | 147 |
|          |     | ◎ 悟禅无欲      | 148 |
|          |     | ◎ 寻找宝藏的人    | 149 |
|          |     | ◎ 杯水禅机      | 149 |
|          |     | ◎ 放逐天堂      | 150 |
|          |     | ◎ “爱”不执著    | 151 |
| ◎ 知色知欲   | 126 | ◎ 禅意清明      | 152 |
| ◎ 空与色    | 127 | ◎ 青梅子不可随便给  | 153 |
| ◎ 不信是真谛  | 128 | ◎ 锁虚空       | 154 |
| ◎ 枯木寒岩   | 129 | ◎ 苦集灭道      | 155 |
| ◎ 天堂地狱   | 130 | ◎ 禅乃无言      | 155 |
| ◎ 开悟心自宁  | 130 | ◎ 虚幻之城      | 157 |
| ◎ 泥中莲花   | 131 | ◎ 皆因绳未断     | 158 |
| ◎ 觉而不迷   | 132 | ◎ 僧与佛珠      | 159 |
| ◎ 放下心结   | 133 | ◎ 吃粥与吃茶     | 160 |



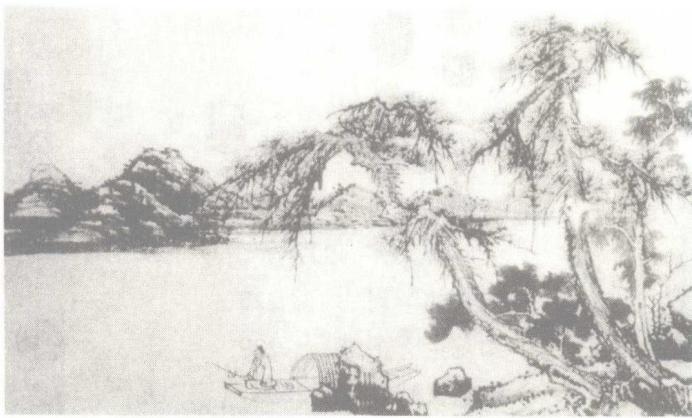
|          |     |        |     |
|----------|-----|--------|-----|
| ◎ 四大皆空   | 161 | ◎ 心境坦然 | 164 |
| ◎ 顺治悟禅   | 162 | ◎ 攢与展  | 165 |
| ◎ 内不心乱为定 | 163 | ◎ 月光满堂 | 166 |



## 明心见性——化作春泥无觅处

禅，不以敬畏，而是拈花微笑，去顿悟。汲取瞬间的领悟，不经意间，便可得之法门，参透生命的玄机；能由一物而知天下，能由小事而识大理。

|               |     |           |     |
|---------------|-----|-----------|-----|
| ◎ 屠夫谢罪        | 171 | ◎ 禅道在身边   | 189 |
| ◎ 婆为媳牵驴       | 171 | ◎ 除去闲名    | 189 |
| ◎ 放下就是解脱      | 172 | ◎ 第三个金人   | 190 |
| ◎ 哭婆变笑婆       | 173 | ◎ 禅师解梦    | 191 |
| ◎ 八风吹不动，一屁打过江 | 174 | ◎ 不淋一人淋两人 | 192 |
| ◎ 当下之时        | 175 | ◎ 超越常识    | 193 |
| ◎ 俗眼无珠        | 175 | ◎ 剪指教徒    | 193 |
| ◎ 老贼教子        | 176 | ◎ 禅师的洗脚石  | 195 |
| ◎ 滴水开悟        | 177 | ◎ 肉眼心眼    | 196 |
| ◎ 谦让顿悟        | 177 | ◎ 听不懂     | 197 |
| ◎ 禅门的人生观      | 178 | ◎ 布施有度    | 198 |
| ◎ 一切皆因自我      | 179 | ◎ 禅师化盐    | 198 |
| ◎ 师姑是女人       | 180 |           |     |
| ◎ 自重自律        | 181 |           |     |
| ◎ 自伞自度，自求自救   | 182 |           |     |
| ◎ 无争无价        | 182 |           |     |
| ◎ 你是佛祖        | 183 |           |     |
| ◎ 禅味的爱心       | 184 |           |     |
| ◎ 信马由缰        | 185 |           |     |
| ◎ 男女无别        | 186 |           |     |
| ◎ 一生万法        | 186 |           |     |
| ◎ 同圆种智        | 187 |           |     |
| ◎ 从容处事        | 188 |           |     |





# 禅是一颗平常心

|            |     |          |     |
|------------|-----|----------|-----|
| ◎ 道信拒旨     | 199 | ◎ 慈悲不易奉行 | 207 |
| ◎ 吃饭睡觉也是修行 | 200 | ◎ 无心自然   | 207 |
| ◎ 即心即佛     | 201 | ◎ 禅说心性   | 208 |
| ◎ 独超物外     | 202 | ◎ 欲壑难填   | 209 |
| ◎ 自悟自证     | 202 | ◎ 只手之声   | 209 |
| ◎ 禅化顽石     | 203 | ◎ 皆有生死   | 211 |
| ◎ 法力无边     | 204 | ◎ 事事随行   | 212 |
| ◎ 心之大小     | 205 | ◎ 会心顿悟   | 212 |
| ◎ 禅是自由     | 206 | ◎ 带不走    | 213 |



## 菩提了悟——大道何需惹尘埃

摩诃般若波罗蜜言：大智慧到彼岸，此须心行，不在口念。口念心不行，如幻如化如露如电。口念心行，则心口相应。本性是禅，离性无别禅。

|          |     |           |     |
|----------|-----|-----------|-----|
| ◎ 磨砖成镜   | 217 | ◎ 活在当下    | 231 |
| ◎ 一休晒经   | 217 | ◎ 中间人，中间事 | 232 |
| ◎ 割肉喂鹰   | 218 |           |     |
| ◎ 护贼度贼   | 219 |           |     |
| ◎ 转移为净   | 220 |           |     |
| ◎ 佛子天然   | 220 |           |     |
| ◎ 风吹云过   | 221 |           |     |
| ◎ 禅宗三境   | 222 |           |     |
| ◎ 佛陀论马   | 223 |           |     |
| ◎ 菩萨也杀生  | 224 |           |     |
| ◎ 清风是知音  | 225 |           |     |
| ◎ 心性随境   | 226 |           |     |
| ◎ 大肚容人   | 227 |           |     |
| ◎ 吃梨的学问  | 228 |           |     |
| ◎ 佛陀也有苦恼 | 229 |           |     |
| ◎ 随它去吧   | 229 |           |     |
| ◎ 虎扑先低头  | 231 |           |     |



# 目录 禅是一颗平常心

|             |     |
|-------------|-----|
| ◎ 乌龟自保      | 232 |
| ◎ 盐的味道      | 233 |
| ◎ 鼎州拾叶      | 234 |
| ◎ 达摩论宝      | 235 |
| ◎ 振聋发聩      | 236 |
| ◎ 荣枯一如      | 237 |
| ◎ 一动一静      | 238 |
| ◎ 欺世盗名      | 238 |
| ◎ 大千世界一禅床   | 239 |
| ◎ 好一个寸丝不挂   | 240 |
| ◎ 灵佑踢瓶      | 241 |
| ◎ 我也不是佛     | 242 |
| ◎ 除草的方法     | 243 |
| ◎ 善恶正反      | 244 |
| ◎ 斩蛇悟性      | 245 |
| ◎ 马上剃度      | 246 |
| ◎ 布袋拖耳      | 247 |
| ◎ 佛心宽宏      | 248 |
| ◎ 聚沙成塔      | 248 |
| ◎ 生命才是宝     | 249 |
| ◎ 雕刻第一课     | 251 |
| ◎ 满与不满      | 252 |
| ◎ 老的大，小的有用  | 253 |
| ◎ 笑口常开      | 254 |
| ◎ 抢不走       | 255 |
| ◎ 度人度己      | 255 |
| ◎ 宽厚仁慈      | 257 |
| ◎ 禅无杂邪      | 257 |
| ◎ 无须在意      | 258 |
| ◎ 道信收徒      | 259 |
| ◎ 无心是道      | 260 |
| ◎ 出世入世      | 260 |
| ◎ 悟得自在      | 261 |
| ◎ 宽容是金      | 262 |
| ◎ 禅师翻跟头     | 263 |
| ◎ 黄檗与唐宣宗    | 263 |
| ◎ 传法要传心     | 264 |
| ◎ 山高怎阻野云飞   | 265 |
| ◎ 佛祖不救人     | 266 |
| ◎ 画饼充饥      | 267 |
| ◎ 如人饮水，冷暖自知 | 268 |
| ◎ 花鲜在水      | 269 |





## 因果机缘——花开花落几度春

阿难陀尊者在灵山会上问佛陀：“何以因果之报？”佛说：“是故世间，一切男女，贫贱富贵，受苦无穷，享福不尽，皆是因果之报。”

|           |     |           |     |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 立雪断臂      | 273 | 勿念窃生      | 298 |
| 一日不做，一日不食 | 274 | 欺人自欺      | 299 |
| 舌之因果      | 275 | 生活禅机      | 300 |
| 盐酱人生      | 276 | 禅的宽恕      | 301 |
| 禅师插秧      | 277 | 月船与艺妓     | 302 |
| 不劳无获      | 277 | 佛法无二      | 303 |
| 供果因果      | 279 | 心生法生，心灭法灭 | 304 |
| 森田司钟      | 279 | 求子杀子      | 304 |
| 心如明镜台     | 280 | 悟而后醒      | 305 |
| 十后悔       | 281 | 禅无旁心      | 307 |
| 磕绊自找      | 282 | 万事皆因果     | 307 |
| 禅师的宝座     | 283 | 白隐与大波     | 308 |
| 度人度心      | 284 | 禅之不定      | 309 |
| 饥吃困眠      | 285 | 树之佛性      | 310 |
| 禅定就是定力    | 286 |           |     |
| 恭敬求佛      | 287 |           |     |
| 有欲必苦      | 288 |           |     |
| 远虑近忧      | 289 |           |     |
| 万物皆有心     | 290 |           |     |
| 七里释盗      | 291 |           |     |
| 因果分明      | 291 |           |     |
| 禅随其变      | 292 |           |     |
| 空由心造      | 294 |           |     |
| 正受烧书      | 294 |           |     |
| 性天真佛      | 295 |           |     |
| 不辱国体      | 296 |           |     |
| 洗碗扫地      | 297 |           |     |



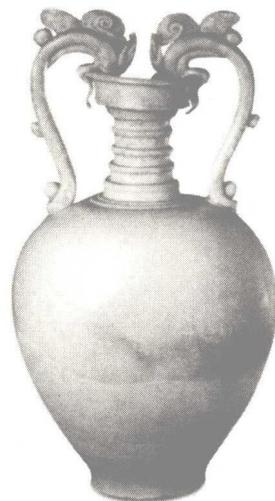
|         |     |         |     |
|---------|-----|---------|-----|
| ◎ 一钵千家饭 | 311 | ◎ 心清秽净  | 318 |
| ◎ 自断希望  | 311 | ◎ 无形无相  | 319 |
| ◎ 误会    | 312 | ◎ 物我皆一  | 320 |
| ◎ 心不及小丑 | 313 | ◎ 一句禅味  | 321 |
| ◎ 严师仪山  | 314 | ◎ 赵州的真义 | 321 |
| ◎ 禅无争辩  | 315 | ◎ 净土在心  | 322 |
| ◎ 睹影自悟  | 316 | ◎ 死水不藏龙 | 323 |
| ◎ 禅之法门  | 317 |         |     |



## 般若波罗——了却无常弃烦恼

做自由的人，要有一颗平常心，自然处事，淡然为人，超然物外，方能泰然自若，坦然无惧。佛以无我之心来普度众生。

|           |     |             |     |
|-----------|-----|-------------|-----|
| ◎ 雪霁便行    | 327 | ◎ 烦恼多因贪念    | 346 |
| ◎ 禅说苦乐    | 328 | ◎ 随遇而安      | 347 |
| ◎ 法身无病    | 329 | ◎ 心象真迹      | 349 |
| ◎ 逍遥圆寂    | 330 | ◎ 峨山开悟      | 350 |
| ◎ 宠辱不嗔    | 330 | ◎ 佛的因果虔诚    | 351 |
| ◎ 一休做女婿   | 331 | ◎ 贪念一起，害人害己 | 352 |
| ◎ 花雨不沾衣   | 332 | ◎ 生死涅槃      | 353 |
| ◎ 石头狮吼    | 333 |             |     |
| ◎ 青草捆和尚   | 334 |             |     |
| ◎ 不假形容    | 336 |             |     |
| ◎ 不慕他佛    | 337 |             |     |
| ◎ 入道三宝门   | 338 |             |     |
| ◎ 缘起性空    | 339 |             |     |
| ◎ 三三见九    | 340 |             |     |
| ◎ 个性是为火焰  | 341 |             |     |
| ◎ 圆满报身    | 341 |             |     |
| ◎ 空也之泪    | 343 |             |     |
| ◎ 心悟其福    | 343 |             |     |
| ◎ 漂泊的诗人禅师 | 344 |             |     |





# 禅是一颗平常心

|           |     |           |     |
|-----------|-----|-----------|-----|
| 化缘度众      | 354 | 一觉成佛      | 365 |
| 有业有报      | 355 | 这就是地狱     | 366 |
| 方外之交，不必同一 | 355 | 诸行无常      | 367 |
| 卖身修福      | 356 | 砍头落地      | 368 |
| 断指求法      | 358 | 意如虚空      | 369 |
| 放下功名      | 359 | 鹤林理佛      | 370 |
| 到处是路      | 360 | 逍遥自在      | 371 |
| 只知贪程，不觉蹉跎 | 361 | 电光火石      | 373 |
| 我往西方走     | 362 | 隐忍为铠      | 373 |
| 心中悟道      | 363 | 生时操劳，死为休息 | 375 |
| 生死同参一首诗   | 364 |           |     |



## 禅诗——灵动的韵律

禅诗渗透了禅理、禅趣、禅境，是动中的极静也是静中的极动，寂而常照，照而常寂，动静不二，直探生命的本原。

|         |     |           |     |
|---------|-----|-----------|-----|
| 闲云野鹤    | 379 | 西风细雨      | 387 |
| 心心相印    | 379 | 佛法圆通      | 388 |
| 月落风香    | 380 | 和风柴扉      | 388 |
| 生生不息    | 380 | 扪心内省      | 389 |
| 无言了悟    | 381 | 寒暑清香      | 389 |
| 人语青苔    | 381 | 香炉日暮      | 390 |
| 夕阳莲花    | 382 | 千山万径      | 390 |
| 水月云霞    | 382 | 顺治问“我”    | 391 |
| 洞里桃花    | 383 | 禅事禅翁，四大皆空 | 391 |
| 今日不知明日事 | 383 | 桃花烟光      | 392 |
| 澄江明月    | 384 | 少年风流      | 392 |
| 天寒风雪    | 384 | 晚风暑雨      | 393 |
| 醒世歌     | 385 | 天然无价      | 393 |
| 青鞋踏雨    | 386 | 风雨花落      | 394 |
| 心闲才是闲   | 386 | 无迹无踪      | 394 |
| 无阻无碍    | 387 |           |     |



# 百味皆苦 ——禅是心灵的瑜伽



手心是烦恼，手背是菩提。只要翻过来便是，无多无少，烦恼变为菩提。所谓『烦恼菩提冰是水，生死涅槃法即空』。若悟得，则人法皆空，若不明，就仍有法执。

